धार्मिक प्रभाव एवं परिवर्तनः मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों के संदर्भ में

डॉ स्वर्णलता तिवारी, सहायक प्राध्यापक संस्कृत शासकीय महाविद्यालय, पथरिया
मोबाइल नंबर 9131159084 Email- swornlatat@gmail-com

सारांश – धर्म मानव के जीवन का प्रमुख आधार है धर्म मानव मात्र को संकीर्णता के धरातल से उठाकर विशाल धरातल प्रदान करता है जहां मनुष्य उच्च नैतिक आदर्शों की ओर उन्मुख होकर अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है धर्म किसी भी सुसंस्कृत समाज की आधारशिला है धर्म के प्रभाव के फलस्वरुप व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपनाकर समाज में एकता स्थापित कर सकते हैं एवं समाज का संपूर्ण विकास कर सकते हैं भारत विभिन्न नेताओं का देश है यहां विभिन्न मतों, संप्रदायों एवं धर्म के व्यक्ति निवास करते हैं संविधान के अनुच्छेद 25 से 28 तक धार्मिक स्वतंत्रता का प्रावधान है जिसके अंतर्गत सभी को अपने–अपने धर्म अनुसार कार्य संपादन की स्वतंत्रता दी गई है।

की वर्ड – धर्म, जनजाति, समाज, आत्मावाद, टोटमवाद, प्रकृतिवाद, जादू, संस्कृति, बहुदेववाद, मध्यप्रदेश, धार्मिक परिवर्तन, ईसाई – मिशनरी, गोंड, भील, कोरकू, गांधीजी।

उद्देश्य– मध्य प्रदेश के जनजातीय समाज में धर्म की क्या स्थिति रही है एवं धर्म का स्वरूप क्या है इनके सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक जीवन में धर्म की क्या भूमिका है धर्म समाज एवं व्यक्तिगत जीवन के दिशा निर्देश में कहां तक उपयोगी है एवं इस तथ्य को जानना कि, धर्म सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता को कितना स्थायित्व प्रदान करता है।

जनजातीय समाज की प्रगति एवं जनजातीय समाज को स्थायित्व प्रदान करने में धर्म अहम् भूमिका का निर्वाह करता है। धर्म जनजातीय समाज में नियंत्रण एवं मार्गदर्शन का कार्य भी करता है मध्यप्रदेश में निवास करने वाली जनजातियाँ अलौकिक शक्ति के प्रति अपने अगाध श्रद्धा रखतीं हैं यद्यपि कर्मकांडों में भिन्नता देखी जा सकती है लेकिन धर्म को समस्त जनजातियाँ मानती हैं मध्य प्रदेश की जनजातियों में धर्म के विभिन्न रूप प्रचलित हैं विभिन्न देवी देवताओं की पूजा आराधना सभी जनजातियाँ अपने अपने तरीके से करतीं हैं जैसे मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति बहुदेववादी है इनकी धार्मिक क्रियाएं ओझा या बैगा कराता है। प्रमुख रूप से बड़ा देव की पूजा की जाती है बड़ा देव को ब्रह्मचारी माना जाता है, वहीं भील जनजाति अंबाजी, चामुण्डा देवी, हनुमान, पीपल, तुलसी की पूजा करते हैं पूर्वजों की पूजा धर्म का मुख्य अंग है। यह लोग देवी–देवताओं को शराब और बलि भी चढ़ाते हैं ।कोरकू जनजाति काली माता गंगा माता की पूजा करते हैं। यह जनजाति महादेव एवं हनुमान के प्रति श्रद्धा रखती है कोरकू जनजाति अपनी उत्पत्ति महादेव की इच्छा से मानते हैं कोरकू जनजाति के गांवों की बाहरी सीमा पर हनुमान की प्रतिमा स्थापित होती है भारिया जनजाति भूमिया देव की पूजा करती है इनके धार्मिक कार्य भूमका कराता है इस तरह जनजातियों की धार्मिक मान्यताओं व परंपराओं में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है । इस कारण धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है यह तय कर पाना कठिन है किंतु कुछ धार्मिक विश्वास ऐसे हैं जो कि मध्य प्रदेश की जनजातियों के अभिन्न अंग हैं।

आत्मावाद. जनजातियों में यह विश्वास है कि सुख और दुख प्रदान करने में आत्माओं की प्रमुख भूमिका होती है अतएव जनजातियाँ इन्हें सदैव प्रसन्न रखने के लिए इनकी पूजा आराधना करती हैं तथा कष्ट पहुंचाने के भय से कभी भी असंतुष्ट नहीं करती हैं इसी आत्मवाद के कारण जनजातियों में पितरों की आत्मा पर विश्वास बढ़ा जो आगे चलकर धर्म के रूप में विकसित हो गया।

टोटमवाद. टोटम का धर्म की उत्पत्ति में विशेष योगदान होता है जनजातीय समाज टोटमवाद के रूप में पौधों और पशुओं से अपने आपको संबंध करता है जनजातियों में टोटमवाद को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है टोटम जनजातीय समाजिक जीवन व संगठन का आधार है मध्य प्रदेश की जनजातियों को टोटम के ऊपर बहुत विश्वास है दीवारों पर चित्र व मूर्तियां बनाई जाती हैं एक टोटम वाली जनजातियाँ आपस में अपने को एक दूसरे का भाई समझतीं हैं।

हाबेल–– टोटम एक ऐसा पदार्थ पशु अथवा पौधा है जिसके प्रति एक समूह के सदस्य विशेष श्रद्धा भाव रखते हैं तथा यह अनुभव करते हैं कि टोटम और उनके बीच भावनात्मक समानता का एक विशेष संबंध है इस कथन से स्पष्ट होता है कि टोटम तथा इसके मानने वाले लोगों के बीच एक भावनात्मक संबंध होने के साथ ही टोटम के प्रति श्रद्धा और पवित्रता की भावना भी होती है।

जादू – जनजातीय समाज में जादू टोना मंत्र तंत्र धर्म के अंग के रूप में समाहित है। पुरोहित एवं ओझा जादुई क्रियाओं को संपादित करते हैं। समस्त जनजातियाँ इन के आदेशों को धार्मिक आदेशों के समान मानती हैं। इन जादुई क्रियाओं का प्रयोग रोगों के उपचार के लिए किया जाता है एवं वर्षा लाने के लिए भी इन क्रियाओं का उपयोग किया जाता है जनजातियों में यह विश्वास प्रचलित है कि जादू के द्वारा बड़ी से बड़ी विपत्ति को टाला जा सकता है। आधिदैविक शक्तियों पर अटूट विश्वास करते हुए उनकी पूजा आराधना गुप्त रूप से की जाती है और यह विश्वास किया जाता है कि ऐसा करने से यह शक्तियां प्रसन्न होकर मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं।

श्यामाचरण दुबे – जादू उस शक्ति विशेष का नाम है जिससे अति माननीय जगत पर नियंत्रण प्राप्त कर उसकी क्रियाओं को अपनी इच्छानुसार भले बुरे शुभ– अशुभ उपयोग में लाया जा सके।

प्रकृतिवाद मध्य प्रदेश ही नहीं अपितु भारत की समस्त जनजातियाँ प्रकृति के प्रति गहन आस्था रखती हैं प्राकृतिक शक्तियों की पूजा की जाती है एवं प्रकृति के उपहारों में श्रद्धा रखी जाती है सूर्य चंद्रमा पृथ्वी नदी तथा वर्षा को शक्तिशाली देवता मानकर इनकी पूजा आराधना की जाती है। मध्य प्रदेश की जनजातियों में प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा अर्चना एवं इन्हें रचयिता एवं सर्वशक्तिमान समझने के अनेकों उदाहरण देखे जा सकते हैं।

धर्म का स्वरूप भले ही कैसा भी हो लेकिन धर्म व्यक्ति को हमेशा सद्मार्ग की शिक्षा देता है धर्म व्यक्ति को छोटा या बड़ा नहीं बनाता बल्कि समस्त व्यक्तियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है धर्म व्यक्तियों के जीवन को सार्थक बनाता है कहा जाता है परिवर्तन प्रकृति का नियम है जैसे–जैसे समय बढ़ता गया वैसे–वैसे जनजातियों के व्यवसाय आर्थिक स्थिति एवं धार्मिक जीवन में परिवर्तन आता गया आज जनजातियाँ दूसरे समाज की संस्कृति को ग्रहण कर अपने धर्म अपने देवी देवता अपनी धार्मिक क्रियाओं को त्याग कर अन्य धर्मों के साथ में सात्मीकरण द्वारा आत्मसात करतीं जा रही हैं।

जैसे जैसे समय बढ़ता गया वैसे–वैसे जनजातियों के व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, एवं धार्मिक जीवन में परिवर्तन आता गया गोंड जनजाति आज हिंदू धर्म से पूर्ण रूप से प्रभावित हो रही है उच्च स्तर वाले राजगोंडों के धार्मिक विश्वास बहुत कुछ हिंदुओं के समान हैं। पहले गोंड समुदाय में परधान शाखा को बहुत ऊंचा दर्जा मिलता था क्योंकि यह लोग धार्मिक क्रियाओं का संपादन करते थे लेकिन जैसे जैसे उच्च स्तर वाले गोंडों ने हिंदू देवी देवताओं में विश्वास करना तथा हिंदू पद्धति के अनुसार व्यवहार करना आरंभ किया ओझा लोगों का महत्व कम होने लगा इस कारण परधान जनजाति को गोंडों में नीचा स्थान प्राप्त है। भीलों के धार्मिक जीवन में होने वाले परिवर्तन बहुत व्यापक हैं परंपरागत रूप से यह जनजाति जिन्हें स्थानीय देवी–देवताओं प्राकृतिक शक्तियों और विभिन्न पदार्थों में जीवित सत्ता से संबंधित विश्वास पाए जाते थे उनका प्रभाव काफी कम देखने को मिलता है । ईसाई मिशनरियों द्वारा जनजातियों को इस्लाम धर्म अपनाने पर जोर डाला गया परिणाम स्वरुप जनजातियों ने अपने धर्म को त्याग कर इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया स्वयं महात्मा गांधी ने लिखा है कि उनको भी इसाई धर्म स्वीकार करवाने का गंभीर प्यार किया गया अपनी आत्मकथा में ये स्वीकार करते हैं कि एक बार कोट्स महोदय ने उन्हें इसाई धर्म की विशेषताओं को बताते हुए उन्हें सहमत करने के लिए उनके गले में पड़ी तुलसी की माला को अंधविश्वास बताया एवं उसे तोड़ने की सलाह दी उस समय तो गांधीजी ने इसे अपनी मां की याद में गले में रखने की बात की कहने का आशय है कि यदि महात्मा गांधी जैसे कुछ शिक्षित एवं दृढ़ इच्छाशक्ति बाले व्यक्ति के धर्म परिवर्तन का प्रयास ईसाई धर्मगुरुओं द्वारा लगातार किए जा रहे थे तो उनके सामने अशिक्षित, अर्द्धनग्न , एवं जंगलों में रहने वाले आदिवासियों की क्या विसात इस पर कोलकाता अधिवेशन में गांधी जी ने कहा था कि इस प्रकार के धर्म परिवर्तन से वे अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं कुछ समय पहले जिन भीलों ने इस्लाम अथवा ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था धीरे–धीरे वे हिंदू त्योहारों को आंशिक रूप से मनाने लगे हैं ।भीलों में अपने आप को महाराणा प्रताप का वंशज मानते हुए क्षत्रिय एवं मराठा घोषित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसका तात्पर्य है कि आज भी लोगों के धर्म को हिंदू धर्म से अलग करके नहीं जाना जा सकता।

पहले संचार साधनों एवं आवागमन के साधनों का व्यापक प्रसार ना होने से जनजातियाँ अन्य जातियों के संपर्क में नहीं आ पाती थीं लेकिन आज चाहे संचार साधन हो या आवागमन के साधन सभी ने इतनी प्रगति कर ली है कि देश के किसी भी क्षेत्र की जनजाति आधुनिक समाज से तेजी से संपर्क साध रही है इंटरनेट एवं मोबाइल फोन के प्रयोग ने जनजाति के रहन–सहन आचार विचार आर्थिक व्यवस्था धर्म एवं संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है परिणाम स्वरूप जनजातियों की जागरूकता में तेजी से वृद्धि हो रही है धर्म के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। जनजातियों में व्याप्त अंधविश्वास में कमी आ रही है। रोगों के उपचार हेतु जहां तंत्र मंत्र जादू टोना आदि का प्रचलन था, उनका स्थान आधुनिक उपचार लेता जा रहा है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण जनजातियाँ अपने अधिकारों को जानकर इनका प्रयोग करने में भी सक्षम हो गई हैं, फिर भी धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया बिना रोक–टोक अबाध गति से चल रही है। क्योंकि भारत का संविधान सभी व्यक्तियों को अपने धर्म के प्रचार प्रसार की स्वतंत्रता देता है विभिन्न धार्मिक संगठन इसका दुरुपयोग सामूहिक धर्म परिवर्तन करने में करते हैं जो पूर्णतः अवैधानिक है ।आज भी मध्य प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियाँ जो अपने धर्म के स्वरूप को ही नहीं जानती ऐसी भोली भाली जनजातियों को आसानी से बहला–फुसलाकर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है यदि इसी तरह से धर्म परिवर्तन का सिलसिला चलता रहा तो जनजातियों की अपनी संस्कृति लुप्त होती जाएगी इसका नकारात्मक प्रभाव हमें निम्न रूपों में देखने को मिल रहा है।

जहां जनजातियों के धार्मिक संगठन मजबूत होते थे एवं एकता की भावना पाई जाती थी वह आज इनमें बिखराव की स्थिति निर्मित हो रही है।

दूसरे धर्म संस्कृति एवं सभ्यता को अपनाने के कारण एवं आर्थिक संसाधन सीमित होने के कारण कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

पूर्ण रूप से शिक्षित ना होने के कारण अपने धर्म को हीन समझना। बड़े बड़े राजनीतिक संगठनों द्वारा दिए गए प्रलोभन में फंस कर शीघ्र ही धर्म परिवर्तन कर लेना, यह धर्म परिवर्तन आंदोलनों का कारण भी बना है। पहले

मनोरंजन के साधन सीमित होने के कारण जनजातियाँ धार्मिक उत्सव द्वारा ही मनोरंजन करती थी किंतु आज तकनीकी क्षेत्र में हुई प्रगति के चलते धर्म का ह्रास हो रहा है।

धर्म परिवर्तन से कुछ जनजातियाँ उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग में बट गई हैं जिससे सांप्रदायिक टकराव की स्थिति निर्मित होती रहती है।जनजातीय समाज की अपनी पृथक राजनीतिक व्यवस्था होती थी जिसके द्वारा यह अपने समूह में नियंत्रण रख अपनी राजनैतिक समस्याओं का समाधान करते थे, लेकिन धर्मांतरण के कारण राजनैतिक व्यवस्था पर प्रहार हुआ है।

राजनीतिक दलों की जनजातिक क्षेत्रों में बढ़ती सक्रियता के कारण जनजातियों में धर्मांतरण एक प्रमुख राजनीतिक मुद्दा बन गया है जनजातीय समाज में धर्मांतरण और धार्मिक शुद्धि यह दो कार्यक्रम चल रहे हैं जिससे जनजातीय समाज विभ्रम की स्थिति में है।

सुझाव.

लगभग सभी जनजातियाँ प्रकृति में गहन आस्था रखती हैं प्रकृति की पूजा करती हैं अतः कुछ ऐसी योजनाएं बनाई जानी चाहिए जिससे यह प्रकृति के प्रति जागरूक रहें एवं आज पर्यावरण संरक्षण हेतु जो नीतियां बनाई जा रही हैं उन नीतियों में इन जनजातियों की भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए।

धर्म से जुड़े कुछ सकारात्मक तत्वों को प्रेरक तत्व के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

ऐसे संगठनों पर रोक लगानी चाहिए जो भोली भाली जनजाति को धर्म परिवर्तन के प्रति उन्मुख करते हैं इसके लिए कानून व्यवस्था की जानी चाहिए।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि शिक्षा का व्यापक प्रसार किया जाए जिससे जनजातियों में अपने धर्म में निहित नैतिक मूल्यों की जानकारी हो सके एवं अपने अपने धर्म के प्रति आस्था में वृद्धि हो सके।

निष्कर्ष––यह सच है कि जनजातीय जीवन धर्म से ओतप्रोत रहा है धर्म आदिवासी जनजातियों के कार्य और व्यवहार को निर्देशित एवं नियमित करता है मानव जीवन के समस्त संस्कारों को धर्म के बिना संपन्न नहीं किया जा सकता धर्म यह विश्वास दिलाता है कि सत्कर्म और अच्छे आचरण से अच्छा फल प्राप्त होता है और जीवन सुखमय बनता है जनजातियों में व्याप्त धर्म का स्वरूप उन्हें अपने पूर्वजों से जोड़े रखता है आदर व सम्मान की भावना का विकास होता है प्रकृति वादी स्वरूप एवं प्रकृति के प्रति गहरी आस्था प्राकृतिक धरोहरों को संरक्षण प्रदान करती है इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि अन्य धर्म को अपनाने से जहां हानियां हुई है वहीं कुछ लाभ भी हुए हैं जनजातियों की सोच का दायरा विकसित होने के साथ–साथ उनके रहन–सहन खानपान एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं धर्म किसी जाति विशेष का उत्थान नहीं करता धर्म का संबंध भावनाओं से होता है इस दृष्टि से धर्म मनुष्य में सहिष्णुता, दया, धर्म, स्नेह, सेवा– भाव आदि सामाजिक गुणों को विकसित करता है इसके परिणाम स्वरूप समाज की व्यवस्था में शक्ति एवं क्षमता के विकास के साथ–साथ राष्ट्र का भी विकास होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची.

- दीक्षित डॉ. ध्रुव कुमार समाजशास्त्र शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी।
- श्रीवास्तव डॉ. ए.पी. समाजशास्त्र रामप्रसाद एंड संस।
- अग्रवाल डॉक्टर गोपाल कृष्ण समाजशास्त्र एसबीपीडी पब्लिशिंग हाउस।
- बरखानिया सुश्री रंजीता धर्म संस्कृति और जनजाति विकास के सरोकार
- पाण्डेय डाक्टर उपेंद्र जी. भारतीय आदिवासी सांस्कृतिक अस्तित्व का संकट।
- श्रीवास्तव डॉक्टर मध्यप्रदेश की जनजातियाँ ।
- शर्मा डॉक्टर श्रीकमल मध्यप्रदच्देश की जनजातियाँ ।